प्रातः क्लास 15-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। रूहानी बाप इस रथ द्वारा रूहानी बच्चों को, जो अपने रथ अथवा आरगन्स द्वारा सुनते, उन्हों प्रति समझाते हैं। यह तो समझते हो बाप के साथ बैठे हैं। यह टीचर भी है गुरु भी है। पहले2 बाप है। बापके आगे जैसे बच्चे होते हैं। बच्चे बाप को घड़ी2 हाथ नहीं जोड़ेंगे। अगर जोड़ते हैं तो समझता हूं यह बाप नहीं समझते हैं। कोई साधु-सन्त आद समझते हैं। क्योंकि जन्म-जन्मान्तर से हीरे हुये हैं ना। गुरुओं साधुओं आद के पांव पड़ने में। पूरीरीत समझा न है। जिनको बाप समझाते हैं वह समझते हैं। बाप आये ही हैं वर्षा देने। तो बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। कल्प2 बाप आते हैं वर्षा देने। इसमें डरने की कोई बात ही नहीं। साधु आद से डरते हैं कि कहां सराप न दे दे। गुरु जी नाराज़ न हो। तुम बच्चे तो जानते हो बाप बहुत2 मीठा है। बाप आये ही है फिरसे आदी सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने। पहले2 तो तुमको ब्राह्मण बनाना होता है। ऊंच ते ऊंच कुल है ब्राह्मणों का। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भी तो हैं ना। ब्रह्मा है ग्रेट2ग्रैण्ड-फादर। तो बच्चे भी जरूर होंगे ना। यह समझ की बात है। भक्ति-मार्ग में तो हैं बेसमझ। जो आया वह कह देते। जो आया वह कर देते। क्या2 कहते रहते। महऋषि भी कहते हैं खाओ-पीओ मौज करो। यह सभीआदतें आपे ही मिट जावेंगी। अभी सिवाय योग के तो कोई आदत मिट नहीं सकती। मिटाने वाला तो जरूर चाहिए ना। इस समय सभी हैं पतित तमोप्रधान। तुम कहेंगे यह ल0ना0 का यह अन्तिम जन्म है। भिन्न2 नाम-रूप देश-काल में पतित हैं। इसमें बड़ी समझ की बात है। अभी देखो गोंदेश हैं हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। निर्गुणका अर्थ नहीं समझते हैं। अभी कोई में गुण नहीं है। विवेक भी कहते हैं रावण राज्य में बेगुणी बन जाते हैं। निर्गुण बालक की भी सोसाईटी कितनी बड़ी है। कितने फन्ड निकालते हैं। अभी निर्गुण बालक। उनको तो गुणवान बनाना है ना। वास्तव में निर्गुण तुम थे। तुम्हारे में कोई गुण नही था। पतित कांटे थे। अभी तुम बोये हो गुणवान बनने। वह तो समझते हैं निर्गुण बालक भी बहुत अच्छी है। और ही नीचे गिरते जाते हैं। ड्रामा अनुसार गिरने का ही है। चढ़ती कला करने वाला तो एक ही बेहद का बाप है। बाप द्वारा ही सभी का भला होता है। अभी सबका भला तो सतयुग में ही होता है। और शान्तिधाम में होता है। यह तो है दुःखधाम। बच्चे सारी ड्रामा के चक्र को समझ गये हैं। तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। पहले तो बाप है ना स्वदर्शनचक्रधारी। 84 के चक्र को बाप ही जानते हैं। तुमको भी स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। परन्तु अलंकार न बाप है न तुमको है। यह भी बड़ी समझ की बातें हैं। बच्चे यह भी समझते हैं देवताओं में कोई ज्ञान नहीं है। परन्तु उनको यह अलंकार दिये हैं। तुमको तो दे नहीं सकते। क्योंकि तुम भी पुरुषार्थी हो। सभी को तो पूरी धारणा नहीं होती है। जब पूरे पक्के हो जाते हैं तब बुद्धि में सारा ज्ञान रहता है। यह है ज्ञान की बात। उन्हों ने फिर स्वदर्शन चक्र को हिंसक बना दिया है। दिखाते हैं कृष्ण स्वदर्शन-चक्र से असुरों को मारते रहते हैं। कुछ भी समझते नहीं है। जैसे मैड-चैप्स हैं। तुमको बाप सभी चित्रों आद का अर्थ बताते हैं। वह है अनराईटियस। यह है राईटियास। जो कुछ भी जानते ही नहीं है वह क्या आकर करेंगे। यह तो तुम बच्चे ही समझते हो। इस रथ पर रथी बैठ नालेज सुनाते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। इतने सभी अनेक धर्म कैसे वृद्धिको पाते हैं। पिछाड़ी में सभी का विनाश होता है फिर बाप आकर वही धर्म स्थापन करते हैं। सेकण्ड व सेकण्ड आत्मा जो एक्ट करती है सो हू बहू फिर वही एक्ट करेंगी। इसमें सुधरने की बिलकुल दरकार ही नहीं। दुनिया तो यही है जो नई और पुरानी होती है। और कोई दुनिया है नहीं। वह लोग तो समझते हैं ऊपर में भी कोई दुनिया है। कहते थे चन्द्रमा में प्लाट लेंगे। वह करेंगे। यह है माया का अति घमण्ड। सायंस का अति घमण्ड। कहां2 जाते रहते हैं। आगे चल नई2 बातें सुनते रहेंगे। सेकण्ड व सेकण्ड नया चलता रहता है। भल टेम्परारी अच्छा रूप भी कर के देखेंगे। परन्तु फिर पिछाड़ी विनाश भी जरूर होना है। इसको कहा जाता है माया का पाम्प। इन सभी बातों को अच्छी रीत समझना है। याद कर धारण करना है। यह तो जानते ही हो बाबा आया हो है पतित दुनिया का विनाश, पावन दुनिया

की स्थापना करने। स्थापना, विनाश और पालना। बाकी शंकर द्वारा विनाश करावे यह तो ला नहीं कहता। वह क्या करेंगे। यह तो उनकी महिमा में चित्र बना दिया है। जैसे हनुमान की महिमा दिखाते हैं। फिर ऐसा है थोड़े ही। शंकर की महिमा करते हैं, कुछ भी नहीं है। रावण का चित्र बनाते हैं, रावण क्या चीज़ है कुछ भी समझते नहीं। तुम भी नहीं समझते थे। यह रथ भी नहीं समझता था। इनका रथी समझते हैं जो अभी समझा रहे हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। आत्मा मानती भी है बराबर हम पतित बन गये हैं। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। तुमको ही पुरुषार्थ करना है। बाकी वह गुरु लोग तो ढेर हैं। कितने उन्हों के फालोअर्स हैं। वह थोड़े ही इतना जल्दी छोड़ेंगे। उनका तो तुमको कुछ भी ख्याल नहीं करना है। तुम सभी को शान्तिधाम का रास्ता बताओ। चक्र के राज़ को भी तुम जानते हो। जो जहां का है उसको वहां ही जाना है। अपना2 पार्ट हरेक को बजाना ही है। इस में मुंझने की बिलकुल दरकार नहीं। पुरुषार्थ कराने वाला रथी और पुरुषार्थ करने वाला यह है। रथ में तुमको पुरुषार्थ कराता हूं तो इनका आटोमेटिकली पुरुषार्थ हो जाता है। ऐसे नहीं कोई मैं प्रेरणा देता हूं। प्रेरणा का अर्थ और कोई कोई है नहीं। प्रेरणा अर्थात ब्रि×ार विचार नहीं। बाकी प्रेरणा और कोई चीज़ नहीं। यह तो तुम बच्चों को नालेज मिलती है। नालेज भारत नालेज। याद की यात्रा का भी नालेज है। चक्र की भी नालेज है। बाप कहते हैं बच्चे मामेकं याद करो। यह है याद का रियल ज्ञान। जो है ही फ×र बाप के पास। वही ज्ञान का सागर है। बाप कहते हैं मुझे बुलाते भी हो ना। ज्ञान सागर को सर्वव्यापी कहना, मिट्टी में मिला देना यह तो गुर्खता हुई ना। कितनी ग्लानी कर दी है। अभी डिनसमो का विनाश भी ड्रामा में नूंध हुआ है। बाप कहते हैं मैं रहम-दिल भी हूं। ऐसा न हो विनाश हो और फिर हम हास्पीटल में फ्यकते रहो। दुःखी होते रहे। नहीं। चीज़ें ही ऐसी बनाते रहते हैं जो सेकण्ड में विनाश हो जाये। सेकण्ड में जीवनमुक्ति होती है तो सेकण्ड में विनाश भी होना चाहिए ना। तुमको ज्ञान भी देते रहते हैं। वह भी ट्रायल करते हैं बास्द आद बनाते जाते हैं। यह है बेहद की बात। यह सूर्य-चान्द आदइस बड़े ब्राण्डे की शोभा है। दिन और रात भी जरूर चाहिए ना। यह है बेहद की बात। पुरानी दुनिया से फिर नई दुनिया भी जरूर बनेगी। जास्ती मनुष्य हो जाये तो फिर खाना आद कहां से आये। अभी तो तत्व भीत तो प्रधान हो गई है। समुद्र भी देखो कितना दुखलेते हैं। स्टीमर आद डूब जाते हैं। कैसे2 अकाली मृत्यु होती है। वहां तो कोई दुःख की बात ही नहीं। उसका तो नाम ही है हेविन। यह ल०ना० हेविन के मालिक हैं ना। अभी तुमको स्क्युरेट नालेज मिलती है। तुम कुछ भी जानते ही नहीं थे तो पूछेंगे फिर क्या। बाप आपे ही सभी कुछ बताते रहते हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। बाकी इन प्रश्नों आद में टाईम वेस्ट क्यों करते हो। जरूरी पुरुषार्थ तो करो। पुराना कचरा निकालो। 84 का चक्र भी तुम ने ही लगाया है। यह समझ तो बुद्धि में आ गई है। यह चक्र की नालेज बुद्धि में हो, बाप की याद हो, तब ही आत्मा यह शरीर छोड़ जाये। ऐसी अवस्था हो तब पद भी पा सकते हैं। पढ़ाई पढ़ते2 ट्रान्सफर हो जाना है। वह तो एक क्लास से दूसरे क्लास में ट्रान्सफर होते हैं। तुम मृत्यु लोक से अमरलोक में ट्रान्सफर होते हो। तुमको खातरी है कल्प2 हम बाप से नालेज सुनते हैं। फिर भूल जाते हैं। ड्रामा में यह नूंध है। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। यह गीता का एपीसुड चल रहा है। पुरुषोत्तम संगम युग है ना। यह युग बदल रहा है। बदलना माना नीचे से ऊंच बनना है। अभी हमारे दुःख के दिन गये। औरों को आसरा देते हैं बाकी थोड़ा समय है। विनाश के बाद शान्ति हो जावेगी। बाकी ऐसे थोड़े ही किसभी धर्म मिल कर एक हो जावेंगे। यह तो झाड़ है। नम्बरवार आते रहते हैं। सभी धर्म मिल कर एक क्या हो जाये। बाप जो धर्म स्थापन करते वह तो है ही एक। इन विचारों को बिलकुल ही पता नहीं। पत्थर बुद्धि हैं। तुम बच्चों को बन्दर खाना चाहिए। यह क्या कहते हैं। कौन सा एक धर्म हो जाये। वह तो बताओ जिसको जो मना है वह कह देते हैं। तुमको तो अभी अथॉरिटी मिली है। तुम जाकर पूछ सकते हो एक धर्म किसको

कहते हो। आगे कब हुआ है जो फिर हो। विश्व में शान्ति तो नई दुनिय सतयुग में थी। वहां तो दुःख की कोई बात हो न सके। शास्त्रों में क्या2 लिख दिया है। सर्प ने डसा। राम की सीता चुराई गई। आठवां गर्भ हुआ। यह तो छी2 हो गई। वहां तो एक ही गर्भ होता है। आठवां फिर कहां से आया। यह सब भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग की बातें। इसलिए बाप कहते हैं हमको ज्ञान देने लिए आना पड़ता है। यह सुख-दुःख का खेल बना हुआ है। और कोई की ताकत नहीं जो यह समझा सके। तुम्हारे में भी जैसे सभी इसे नहीं समझते हैं। पढ़ाई में नम्बरवार होते हैं। अभी टाईम पड़ा है। हार्ट-फेल न होना चाहिए। पुरुषार्थ कर फलो करो। टीचर की पढ़ाई धारण करनी चाहिए। कल्याणकारी बच्चों को औरों का भी कल्याण करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते बुधि का योग बाप के साथ लगाओ। जैसे आशुक माशुक होते हैं ना। भोजन खाते रहेंगे सामनेआशुक की सिकल आ जायेंगे। वह विकार के लिए नहीं होते हैं। सिकल पर आशुक होते हैं। काम करते रहेंगे, आशुक सामने खड़ा है। फिर गुम हो जाता है। दीदार भी ऐसे ही होता है। यह तो समझ की बात है। बाप पढ़ाते हैं। बाप को तो तुम इन आंखों से नहीं देख सकते हो। न आत्मा को देख सकते हो। दिव्य-दृष्टि से देख सकते हो। परन्तु देखने से क्या फायदा। आत्मा तो न्यारा सितारा है। उनको देखनेसे पद नहीं मिलता है। यह तो पढ़ाई है। मूल बात है योग की। जिससे ही पावन बन सकते हैं। तुम्हारी मेहनत भी इसमें ही लगती है। भगवानुवाच: बच्चे अपने को आत्मा समझो। फिर भी कहते हैं भूल जाते हैं। बाप तुमको ड्यूटी डायरेक्शन देते हैं उन पर चलना है। यह तो समझते हो सभी नहीं समझेंगे। नम्बरवार है। फिर भी एकरस कभी रहेंगे।

तुम समझते हो यह सारी दुनिय कोस-घर है। एक दो को कोस करते हैं तभी तो सन्यासी लोग वन भागते हैं। दोनों की छुरी इकट्ठी चलेगी। एक थोड़े ही विकार में जा सकते हैं। बाप कहते हैं तुम पवित्र गृहस्थ मार्ग में थे। अभी अपवित्र हो। फिर पवित्र बनो। मैं आर्डिनेन्स निकालता हूं इन काम को जीतो। याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के विकर्म विनाश हो जायेंगे। धीरे2 तुम विकर्मी बने हो। पाप चढ़ते गये हैं। अभी कोई भी पाप नहीं करना है। मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया तो बहुत डन्ड पड़ेगा। सद्गुरु का निन्दक • गुरु तो गिराते ही रहते हैं। बाप आकर पावन बनाते हैं। फिर तुम पतित कैसे बने हो। बाप आकर समझाते हैं भक्ति मार्ग है ही पतित मार्ग। सीढ़ी उतरनी ही है। सतोप्रधान से सतो रजो तमो होना ही है। यह है कांटों का झाड़। फिर तुम फूलों के झाड़ में जायेंगे। कोई भी बात में मुंझने की दरकार नहीं है। बाप कहते हैं तुम इस ड्रामा में आलराउन्ड पार्ट बजाते हो। तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। अभी बाप ने समझाया है। कितनी अच्छी समझानी है कितनी दिल खुशी होती है। बाप हमको पढ़ाते हैं। बाबा निराकार है तो हम भी निराकार बन

***